विद्याभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा – अष्टम **दिनांक -01 - 11 - 2021**

विषय -हिन्दी **विषय शिक्षक - पंकज कुमार**

सुप्रभात् बच्चों आज कैकेई का अनुताप नामक शीर्षक के बारे में अध्ययन करेंगे।

- **कहते आते थे यही सभी नरदेही,**
  "माता न कुमाता, पुत्र कुपुत्र भले ही।"
  अब कहें सभी यह हाय! विरुद्ध विधाता,-
  "है पुत्र पुत्र ही, रहे कुमाता माता।"
  बस मैंने इसका बाह्य-मात्र ही देखा,
  दृढ़ हृदय ने देखा, मृदुल गात्र ही देखा।
  परमार्थ न देखा, पूर्ण स्वार्थ ही साधा,
  इस कारण ही तो हाय आज यह बाधा।
  युग युग तक चलती रहे कठोर कहानी-
  'रघुकुल में भी थी एक अभागिन रानी।'

शब्दार्थ नरदेही-मानव तन धारण करने वाला, मनुष्य; कमाता -बुरी माता; । कुपुत्र -बुरा पुत्र; विधाता -ईश्वर;बाहा-मात्र -बाहरी दल -स्थिर, कठोर; मृदुल -कोमल;गात्र -गात, शरीर परमार्थ-दूसरों का हित साधा -पूरा किया; अभागिन -भाग्यहीना

सन्दर्भ पूर्ववत्।

प्रसंग प्रस्तुत पद्यांश में कैकेयी स्वयं को धिक्कारते हुए भरत के हृदय को न समझ पाने की असमर्थता को व्यक्त कर रही हैं।

व्याख्या आत्मग्लानि में डूबी हुई कैकेयी कहती हैं कि अभी तक तो मानव जाति में यही कहावत प्रचलित थी कि पुत्र, कुपुत्र भले ही हो जाए, माता कभी कमाता नहीं होती अर्थात् पुत्र माता के प्रति अपने कर्तव्यों को पूरा करने में चाहे कितनी भी लापरवाही क्यों न दिखाए, उनके प्रति कितना भी अपराध क्यों न करे, माता उसे क्षमा करके उसके प्रति अपना

उत्तरदायित्व सदा निभाती ही रहती है, किन्तु अब तो सभी लोग यह कहेंगे कि विधाता के बनाए नियमों के विरुद्ध यहाँ पुत्र तो पत्र ही है, माता ही कमाता हो गई है अर्थात् संसार मुझ पर बुरी माता होने का आरोप लगाएगा. क्योंकि मैंने पुत्र के हित के विरुद्ध कार्य किया है।

कैकेयी अपने दोष गिनाते हुए आगे कहती हैं, कि मैंने अपने पुत्र (भरत) का केवल बाहरी रूप ही देखा है, उसके दृढ़ हृदय को मैं न समझ सकी। मेरी दृष्टि बस उसके कोमल शरीर तक गई, उसके परमार्थी स्वरूप को मैं अब तक न देख सकी। इन्हीं कारणों से आज मैं इन समस्याओं से घिरी हूँ और मेरा जीवन दुभर हो गया है। अब तो युगों-युगों तक मैं दुष्ट माता के रूप में जानी जाऊँगी। मुझे याद कर लोग कहेंगे कि रघुकुल में एक अभागिन रानी थी, जिसे स्वयं उसके पुत्र ने त्याग दिया था।

काव्य सौन्दर्य

भाव पक्ष

(यहाँ कैकेयी के द्वारा भरत को न पहचान सकने के पश्चाताप का भाव व्यक्त किया गया है, साथ-ही-साथ समाज में होने वाले अपयश से उन्हें अत्यधिक चिन्तित भी दर्शाया गया है।